# श्रीमद्वल्लभाचार्य चरण की सूक्तियां
## (श्री सुबोधिनी से)

# धर्म-भावना

**धर्मो धर्मिमूलः तदविरोधेन कर्तव्यः फलार्थं न कर्तव्यः** (१०-२६-३२)

धर्म, धर्मि (ईश्वर) मूलक है। अतः धर्मि (ईश्वर) से विपरीत किया हुआ धर्म, धर्म नहीं है। फल के लिये (फल की आशा से) धर्म नहीं करना चाहिये।

**धार्मिविचारो धर्मादप्यधिकः** (१०-२६-३२)

धर्मि का विचार धर्म से भी अधिक है। अर्थात् हम धर्मि को मुख्य मानें और धर्मि के लिये यदि धर्म छोड़ना पड़े तो उसे भी छोडना चाहिये।

**व्याजकरणं धर्मो न भवति** (१०-७५-१८) **पुत्रादिकामनया क्रियमाणो धर्म धर्म एव न भवति** (१-२-७)

धर्म किसी निमित्त से नहीं करना चाहिये। पुत्रादि कामना से किया हुआ धर्म, धर्म ही नहीं है—ऐसे धर्म को प्रभु अंगीकार नहीं करते।

**धर्मकर्ताऽपि भूतद्रोहं चेत्कुर्यात् तदा शं न लभेतैव** (१०-४७-४७)

धर्म करने वाले पुरुष को किसी भी प्राणी का द्रोह नहीं करना चाहिये। सब पर दया ही करनी चाहिये। द्रोह करने वाले पुरुष को कभी सुख नहीं मिलता।

(कवर पेज ३ भी देखें)

INDIAN INSTITUTE OF ADVANCED STUDY
Acc. No. 16034
Date 31/10/61
SIMLA
In 2
Library IIAS, Shimla
TMP 294.551 2 In 2
00016034

।। श्रीमद्वल्लभाधीशो जयति ।।

## अखिल भारतीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् के

# लक्ष्य और गतिविधि

१. परिषद् की स्थापना सर्वप्रथम गोपालपुर (जतीपुरा) में २३ सितम्बर १९५६ को गो० श्री पुरुषोत्तमलालजी महाराज (कोटा) की अध्यक्षता में हुई, तथा इसका पंजीकरण, रजिस्ट्रेशन आफ सोसायटीज एक्ट के अन्तर्गत ५ जनवरी १९५९ को हुआ ।

२. संस्था का प्रमुख उद्देश्य श्रीमद्वल्लभाचार्य चरणद्वारा प्रवर्तित शुद्धाद्वैतदर्शन तथा पुष्टि-भक्ति-मार्ग का प्रत्येक उपायों से अध्ययन, अन्वेषण, प्रचार तथा प्रतिपालन है-(इन के अन्तर्गत प्रशिक्षण, साहित्य मुद्रण, ललित कलाओं की अभिवृद्धि, पुष्टिमार्गीय संस्थाओं---पाठशाला, पुस्तकालय, सत्संग मंडल, मंदिर प्रभृति-का सुसंचालन संरक्षण आदि का समावेश भी होता है) । अपने इन लक्ष्यों के साथ ही परिषद् का यह भी प्रयत्न है कि वह समाज में विद्यमान न्यूनताओं को दूर करे तथा धार्मिक परंपराओं के साथ ही सामाजिक आर्थिक तथा चारित्रक स्तर को उन्नत करे और अपने दिन प्रतिदिन के जीवन में मित्रता, प्रेम तथा सहानुभूति मिश्रित विश्व-बंधुत्व की भावना उत्पन्न करे ।

३. अपने इन ध्येयों को लेकर परिषद् ने गत ८ वर्षों से, आगे बढ़ने का प्रयास किया है । अब तक परिषद् का प्रायः शैशव काल ही रहा है और पर्याप्त रूप से उसके विकास में, कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है । इनमें सर्वाधिक रूप से हमारे समाज में संगठन की भावना का अभाव होना यही सबसे बड़ी कठि-नाई रही है । जबकि पुष्टि संप्रदाय उच्चतम आदर्श वाला, साहित्य

और संस्कृति में समृद्ध, श्रद्धा और भक्ति भाव से परिपूर्ण है, संप्रदायमें प्रतिभाशाली गोस्वामि एवं विद्वान हुए हैं, और हैं, तब केवल संगठन के अभाव के कारण हम वर्तमान समय के आघातों के सन्मुख टिक नहीं पा रहे हैं। व्यक्तिगत रूप से अथवा छोटे छोटे समूहों के रूप में किये गये हमारे प्रयत्न विच्छृंखलित एवं पुनरावृत्ति-पूर्ण हो रहे हैं और उनसे अभीष्ट परिणामों को हम नहीं पहुंच पाते ।

४. कभी कभी परिषद् की सीमित शक्तियों तथा साधनों का उपयोग संप्रदाय की तात्कालिक समस्याओं के हल के लिये करना पड़ा है—जिससे अन्य दिशाओं में परिषद् की गति रुक गई। इस प्रकार का एक प्रमुख उदाहृण है श्री नाथद्वारा प्रकरण, जो परिषद् के प्रारम्भ काल से ही एक गंभीर संकट के रूप में उपस्थित हो गया और आज भी वैसा ही बना हुआ है। इस संबंध में परिषद् द्वारा किये गये प्रयासों का उल्लेख नीचे आवेगा। इन सब परिस्थितियों में से परिषद् अत्यन्त कठिनता तथा अनेक उतार चढ़ाव में से गुजर रही है । तथापि आज परिषद् की स्थिति काफी सुदृढ़ है और भविष्य के लिये बहुत आशावादी। नीचे परिषद् द्वारा प्राप्त कुछ उपलब्धियों का उल्लेख किया जाता है।

## संगठन और प्रचार:—

५. परिषद् ने यह अनुभव किया है कि दृढ़ संगठन के बिना उसके लक्ष्यों की पूर्ति में सफलता मिलना बहुत कठिन है। जबकि प्रारंभ से ही परिषद् ने अपनी सदस्यता बढ़ाने, अधिकाधिक आजीवन सदस्य बनाने, तथा स्थान स्थान पर शाखाएं खोलने का प्रयास किया है, तथापि इस कार्य में कुछ दिन पूर्व तक हमें विशेष सफलता नहीं मिल पाई। इस अभाव का कटु अनुभव हमें उस समय मिला जब श्रीनाथद्वारा प्रकरण में सुप्रीम कोर्ट ने अपने निर्णय में यह उल्लेख किया कि यद्यपि भारतीय संविधान के अनुसार प्रत्येक संप्रदाय को अपनी सब प्रकार की धार्मिक व्यवस्था संचालन करने

का पूर्ण अधिकार है तथापि, सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि, ऐसी कोई पुष्टिमार्गीय संस्था हमारे सामने नहीं आई जो व्यापक रूप से संप्रदाय का प्रतिनिधित्व करने के अपने दावे को प्रमाणित कर सके। संप्रदाय के अनुयायियों का ऐसा कोई रजिस्टर भी देखने में नहीं आया और ऐसी दशा में, सुप्रीम कोर्ट ने कहा, राजस्थान शासन ने वर्तमान परिस्थिति को लक्ष्य में रखते हुए टेम्पल बोर्ड के सदस्यों की जो नियुक्ति की वह उचित ही है।

६. इस घटना ने हमारी शिथिलता-पूर्ण प्रवृति को काफी प्रेरित किया – और तबसे परिषद् ने अपने प्रयत्नों को इस ओर विशेष रूप से बढ़ाया कि वह अपने सदस्यों की संख्या बढावे तथा आजीवन सदस्यता में अभिवृद्धि करे जिससे स्थायी कोष बढे तथा परिषद् के कार्य संचालन में आने वाली कठिनाइयों में कमी हो सके।

७. यह प्रकट करते हुए परम हर्ष है कि इस एक वर्ष की अवधि में अपनी पुरानी शाखाओं जिनकी संख्या करीब २० थी और जो प्राय: सुप्त प्राय दशामें थीं उनको पुन: संगठित किया जा रहा है और अब १८ नवीन शाखाएं स्थापित की जा चुकी हैं। आजीवन सदस्यों की संख्या जो कई वर्षों से ७०-७५ से अधिक नहीं हो पाई थी उसमें एक ही वर्ष में अब करीब १०० और आजीवन सदस्यों की अभिवृद्धि हो गई है। साधारण सदस्यों की संख्या में तो सहस्रों की अभिवृद्धि हुई है।

८. स्थान स्थान पर अब परिषद् अपनी कार्य-कारिणी समिति की त्रैमासिक मीटिंग की आयोजना करती है और उस समय आस पास के प्रदेशों का बृहदधिवेशन कर जन साधारण में अपने प्रचार को बढाती है। बंबई में ता. २ अप्रैल से १६ अप्रैल १९६५ तक हो रहा अधिवेशन इन्हीं प्रयत्नों का एक नमूना है। इससे कुछ ही दिन पूर्व इन्दौर में इसी प्रकार का एक अधिवेशन कर वहां स्थानीय शाखाओं के साथ एक प्रदेशीय

शाखा भी स्थापित की गई, और उसी का नैरन्तर्य करते हुए आस पास के प्रदेशों में प्रचार कर १२ स्थानीय शाखाएं प्रदेश शाखा के अन्तर्गत स्थापित की गईं और यह कार्य अभी चालू है। प्रयत्न यह है कि ऐसी प्रदेशीय तथा उसके अन्तर्गत स्थानीय शाखाएं कायम की जाएं जिससे परिषद् का एक देश व्यापी सुसम्बद्ध संगठन बन जाए और तब कोई यह न कहे कि संप्रदाय का प्रतिनिधित्व करने वाला कोई संगठन नहीं है।

## संप्रदाय की समस्याओं को हल करने का योजना बद्ध कार्यक्रम :

९. संप्रदाय की विविध प्रवृतियों को योजना-बद्ध रूपसे संचालन करने की दृष्टि से परिषद् ने जतीपुरा में सितंबर १९६४ में एक चर्चा सभा (Seminar) का आयोजन किया जो कि अत्यन्त सफल रहा। इसमें कई प्रमुख गोस्वामि महानुभावों एवं विद्वानों ने उपस्थित रह कर योगदान दिया और (१) संगठन (२) शिक्षा (३) साहित्य सुरक्षा और प्रकाशन (४) मन्दिरों का संचालन (५) सांस्कृतिक प्रवृत्तियां (६) शोध, अन्वेषण तथा इतिहास (७) ऐतिहासिक स्थलों की सुरक्षा तथा (८) प्रचार, इन विषयों पर संप्रदाय संगठित रूपसे क्या करे इसका प्रारम्भिक विचार किया। चर्चा सभा के ये निर्णय एक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हो चुके हैं।

१०. चर्चा सभा में लिये गये इन निर्णयों को कार्यान्वित करने की दृष्टि से ऊपर बताये हुए आठ विभागों को अलग २ सक्षम संचालकों—गोस्वामि बालकों—के नेतृत्व में दिया गया है जिससे तत्तद् विभागों संबंधी योजना बनाकर परिषद् के तत्त्वावधान में वह कार्य सम्पन्न किया जाए।

## प्रत्यक्ष उपलब्धियां :

११. उक्त विषयों में से 'संगठन' और 'प्रचार' के क्षेत्र में परिषद् ने इस एक ही वर्ष में जो कुछ किया उसका उल्लेख ऊपर

आचुका है। 'शिक्षा' के क्षेत्र में परिषद् ने बाल शिक्षा मंदिरों की स्थापना से कार्यारंभ किया है और पाया जाता है कि इस विषय में वैष्णवों की प्रतिक्रिया बडी आशापूर्ण है। इस कार्य के लिये सम्पति या जायदाद के रूप में अनुदान मिले हैं तथा परिषद् एक शैक्षणिक ट्रस्ट स्थापित करने के प्रयत्न में है । इसी प्रकार 'ऐतिहासिक स्थलों की सुरक्षा' के लिये भी एक ट्रस्ट स्थापित करने का प्रयत्न चल रहा है। 'मन्दिरों के संचालन' के प्रश्न का वर्तमान कानूनों को दृष्टि में रखते हुए किस प्रकार हल किया जाए इसका शीघ्र ही व्यवहारात्मक हल ढूँढने में प्रमुख गोस्वामि महानुभाव संलग्न हैं। "साहित्य सुरक्षा और प्रकाशन" विषय में परिषद् एक मुद्रणालय की स्थापता की योजना पर कार्य कर रही है तथा इस संबंध के अन्य प्रश्नों पर रचनात्मक दृष्टि से विचार करने के लिये बंबई में ता. १३ और १४ अप्रेल १९६५ को एक विशिष्ट विचार गोष्ठी (चर्चा सभा) आयोजित की गई है ।

**श्रीनाथद्वारा प्रकरण :**

१२. जबसे नाथद्वारा टेम्पल एक्ट के अन्तर्गत नाथद्वारा टेंपल बोर्ड की नियुक्ति हुई यह प्रकरण अत्यन्त उलझन पूर्ण बन गया और अभी भी है। इसके हल के लिये अपने अपने ढंग से जब कि श्रीमान् तिलकायतजी तथा गोस्वामि वर्ग ने प्रयत्न किये, परिषद् ने भी एक स्वतंत्र समिति श्रीनाथद्वारा प्रकरण समिति का निर्माण कर अपना योगदान दिया । तीनों पक्षों की ओर से ये मामले हाइकोर्ट तथा सुप्रीमकोर्ट तक चले । इन वरिष्ठ न्यायालयों के निर्णयों को भी, वैष्णव जनता की मान्यता है कि, राजस्थान-शासन तथा टेम्पल बोर्ड वास्तविक अर्थ में प्रतिपालन करने को तैयार नहीं हो रहे हैं इससे वैष्णव जनता दुखी है। इन निर्णयों का यथोचित पालन कराने की दृष्टि से परिषद् एवं नाथद्वारा प्रकरण समिति का एक शिष्ट मंडल राजस्थान के महामहिम राज्यपाल, मुख्य मंत्रीजी, देवस्थान मंत्रीजी आदि से मिला तथा सहस्रों की संख्या में वैष्णव जनता के हस्ताक्षर और तार भिजवाये । परिषद् ने आजभी अपने

प्रयत्न चालू रखे हैं—तथा अभी अभी राजस्थान विधान सभा के सदस्यों को टेम्पल एक्ट के संशोधन बिल को, बिना पार्टी पक्ष के, पास करने को एक स्मृति पत्र भेजा है तथा इसके समर्थन में स्थानीय शाखाओं तथा प्रमुख व्यक्तियों से तार भिजवाये हैं।

१३. कहा जाएगा कि इन सब प्रयत्नों का परिणाम क्या हुआ? अवश्य, प्रत्यक्ष रूप से हमें कुछ भी नहीं दिखता, परन्तु अन्तः स्रोतों को देखते हुए परिषद् अवश्य आशावादी है। सुना गया है कि अनुचित एवं अन्याय पूर्ण रूप से रोक रखे हुए टेंपल एक्ट के अन्तर्गत नियम निर्माण के कार्य को, राजस्थान शासन ने अब वरिष्ठ एडवोकेट्स श्रीसेतलवाद और श्रीदफ्तरी के सुपुर्द किया है और बहुत संभावना है कि इस रूप से ऐसा कोई हल निकल आवे जो उभय पक्षों को मान्य हो। वैष्णव जनता को इस नाथद्वारा प्रकरण पर भी पूर्ण रूप से सुसंगठित होकर अपने अधिक से अधिक बल के साथ इसका हल प्राप्त कराने में सहयोग देना है तथा परिषद् के हाथ मजबूत बनाना है। यह कार्य जितना शीघ्र होगा, उतना ही इस समस्या का हल सन्निकट है।

## "श्रीवल्लभ विज्ञान" का प्रकाशन :—

१४. परिषद् ने कुछ वर्ष पूर्व तक अपने प्रचार कार्य को बढ़ाने के लिये "परिषद्-संदेश" नामक एक मासिक पत्र चलाया, परन्तु अर्थाभाव से उसका कार्य शिथिल होता गया। इस बीच में इन्दौर से नि. ली. द्वितीय गृहाधीश गो. श्रीगिरिधरलालजी महाराज के संरक्षण में वैष्णव मित्र मंडल के द्वारा प्रकाशित "श्रीवल्लभ विज्ञान" ने यह स्वीकार किया कि वह एक वर्ष तक अपने आठ पेज प्रति मास परिषद् के प्रचार के लिये निःशुल्क दे दिया करेगा। यह व्यवस्था अक्टूबर १९६३ से चालू की गई। तदनंतर अक्टूबर १९६४ में परिषद् की कार्य कारिणी समिति ने "श्रीवल्लभ विज्ञान" को अपना मुख-पत्र (हिंदी संस्करण), के रूप में मान्यता देने का

निश्चय किया व तदनुसार वह अब इस रूप में प्रकाशन हो रहा है।

१५. "श्रीवल्लभ विज्ञान" पत्र ने अपने इन चार वर्षों की अवधि में अध्ययन, संगठन व प्रचार के ध्येयों को लेकर अत्यन्त संतोष जनक प्रगति की है, जिससे उसकी लोक-प्रियता दिन प्रति दिन बढ़ रही है। "श्रीवल्लभ विज्ञान" ने अध्ययन के रूप में लेख-मालाओं के द्वारा कई महत्त्व पूर्ण प्रकाशन वैष्णव जनता को दिये हैं। '–यथा-सिद्धान्त रहस्य–एक अध्ययन' 'श्रीहरिरायजी महाप्रभु–जीवन चरित्र व साहित्यावलोकन, 'श्रीवल्लभ प्राकट्य महोत्सव विशेषांक सं. २०१९ व सं. २०२०' 'श्रीपुरुषोत्तम सहस्त्रनाम–स्तोत्र मूल एवं हिंदी अनुवाद सहित, पुष्टिमार्गोपदेशिका प्रथम भाग, श्री वृजयात्रा विशेषांक, श्री सुबोधिनी पथ-प्रदर्शक-प्रथम भाग, निबंध–शास्त्रार्थ प्रकरण; आदि ! तथा इसके बाद ही अब श्रीमद्भागवत दशमस्कंध के तामस प्रकरण पर सुबोधिनी पथ प्रदर्शक का द्वितीय भाग प्रकाशित होने जा रहा है। "श्रीवल्लभ विज्ञान" के संबंध में संप्रदाय के कतिपय महानुभावों के अभिप्राय इस लेख में अन्यत्र दिये गये हैं।

१६. परिषद् का मुख पत्र होते हुए भी "श्रीवल्लभ विज्ञान" का कोई आर्थिक भार परिषद् कार्यालय पर नहीं है यद्यपि अभी इस पत्र की संतुलित अर्थ व्यवस्था नहीं बन पाई है। इस पत्र की उपादयेता एवं लोकप्रियता के कारण सर्वत्र वैष्णव समुदाय से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अधिकाधिक रूप में इसके ग्राहक बनें तथा बनावें, जिससे इसकी अर्थ-व्यवस्था सुदृढ़ हो सके व परिषद् पर इस कार्य के लिये कोई अर्थ-भार न पड़े। परिषद् का यह भी विचार है कि अर्थ-व्यवस्था अनुकूल हो सके तो इसके गुजराती तथा अन्य भाषाओं में भी संस्करण निकाले जावें।

**अपील !––**

१७. अंत में सब वैष्णव बंधुओं से यह निवेदन है, कि वे परिषद् की प्रवृत्तियों की तरफ विशेष ध्यान देवें तथा अपने हर प्रयत्नों से

उन्हें आगे बढ़ाने के लिये सब प्रकार सहयोग देवें। विशिष्ट रूप से उन्हें परिषद् की सदस्यता में वृद्धि करनी है, जिससे हम यह कहने की परिस्थिति में हो सकें कि हमारे संप्रदाय में सही अर्थ में एक प्रतिनिधि संस्था है और वह भारतीय संविधान के अनुसार अपनी समस्त धार्मिक व्यवस्था के संचालन के लिये सक्षम है। तदर्थ हम स्थानीय एवं राज्यीय शाखाएं स्थापित करें, तथा आजीवन सदस्यता बढ़ावें जिससे परिषद् का सुरक्षित कोष बढ़ कर उसके ब्याज से हमारी विभिन्न प्रवृत्तियों को चलाने के लिये, हमारी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो सके। कई स्थानों में केवल निराशावादी तथा दोष बताने की प्रवृत्ति हम पाते हैं--ऐसे व्यक्ति केवल यह पूछते रहते हैं कि परिषद् ने क्या किया ! या यह कहते हैं कि यह नहीं किया--वह नहीं किया ! परन्तु रचनात्मक रूप से वे स्वयं कोई कार्य करने को तैयार नहीं पाये जाते ! यदि परिषद्, कुछ नहीं कर पाती है तो इसके दोष भागी हम स्वयं हैं। अस्तु, परिषद् आत्मविश्वास और बल पर आगे बढ़ना चाहती है – ओर वह पूर्ण रूप से आशान्वित है कि श्रीमदाचार्यचरणों की कृपा से वह अपने लक्ष्यों की पूर्ति में सफल होगी।

१८. परिषद् की आज तक की उपलब्धियां श्रीमद्गोस्वामि बालकों (जो कि उसके अध्यक्ष उपाध्यक्ष एवं अन्य विभागों के अध्यक्ष रहे, तथा आमतौर पर सभी गोस्वामि बालकों) के सहयोग और आशीर्वाद से प्राप्त हुई हैं। यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि यह सहयोग एवं पारस्परिक समन्वय अधिक से अधिक रूप में किस प्रकार हो सके, इसके लिये श्रीमद्गोस्वामि बालक सक्रिय रूप से प्रयत्न शील हैं। -

# श्री वल्लभ-विज्ञान के प्रकाशन पर अभिप्राय

**श्री १०८ गो० श्री गोविन्दरायजी महाराज, पोरबन्दर:—**

"हिन्दी में उपरोक्त मासिक का प्रकाशन आपका एक अत्युपयोगी कदम है ।'

**श्रीमद् गो० श्री १०८ श्री मथुरेश्वरजी महोदय, बड़ौदा**

"श्रीवल्लभविज्ञान सामयिक प्रथम वर्ष प्रथम अंक से लेकर आखिर के अंक तक आपके प्रेषित सभी अंक मुझे मिले । सभी को पढ़कर खुशी हुई । विशेष करके सुचारु संपादन, अच्छी लेख सामग्री, तथा मात्र साम्प्रदायिक उत्कर्ष की भावना को सामने रखते हुए वल्लभ विज्ञान सामयिक का संचालन मुझे अत्यन्त सराहनीय एवं संतोषप्रद लगा । हमारे शुद्धाद्वैत पाठ्य पुस्तक 'पुष्टिमार्गोपदेशिका' को हिन्दी अनुवाद से क्रमश: वल्लभविज्ञान में प्रगट करने से आपको धन्यवाद देते हैं ।

श्रीमद्वल्लभाचार्यजी महाप्रभुजी के जयंति उत्सव के उपलक्ष में प्रगट हुआ वल्लभविज्ञान का अंक देखकर तो मुझे बहुत ही प्रसन्नता हुई ।

मेरे मन में बहुत दिनों से यह भावना थी कि हिन्दी में भी एक अच्छा सामयिक प्रगट हो क्योंकि हिन्दी भाषा-भाषी जनों को भी हमारे श्रीमदाचार्य चरणों को समझने की जिज्ञासा है और उन लोगों में सांप्रदायिक सिद्धांत प्रचार की भी अतीव आवश्यकता है । आप लोगों की वल्लभविज्ञान योजना से संतोष हुआ । आशा है और भी ज्यादा वल्लभविज्ञान इस दिशा में उत्तरोत्तर सफल कार्य करेगा । आपकी भावनाओं को सहस्रश: धन्यवाद !

**पू० पा० श्री १०८ गो० श्री दीक्षितजी महाराजात्मज**
**श्री १०८ चि० गो० श्री श्याममनोहरजी, बम्बई**

"आपके तथा मुखियाजी के कुशल संपादन में प्रतिमास अवतरित होता 'श्री वल्लभ विज्ञान' विषय-चयन, संपादन, छपाई, कागज इत्यादि सभी दृष्टिकोणों से उच्चतर का ही नहीं, अपितु अत्यन्त अभिनन्दनीय भी है। सांप्रदायिक लेखकों की कमी अपना असामर्थ्य है, पत्र की या पत्रकारिता की न्यूनता नहीं। और यही प्रभुप्रार्थ्य है कि इस कमी को दूर करते हुए इस पत्र का प्रसार व प्रचार संप्रदाय के हेतु अधिकाधिक बढ़े। यद्यपि पूज्य श्री दादाजी यहां पर नहीं हैं तथापि उनकी ओर से भी पत्र की अभिनन्दनीयता वैष्णव समुदाय ज्ञातकरें"।

**श्री प्रो० जेठालाल गोवर्धनदास शाह एम० ए० अहमदाबादः-**

"आज से लगभग १२ मास पूर्व "श्री वल्लभ विज्ञान" का प्राकट्य हुआ, फिर भी उसने बड़ी तेजी से प्रगति की है।.... यह पत्र सर्वांग से शुद्ध पुष्टिमार्गीय मासिक है। श्री महाप्रभुजी की शुद्ध पुष्टि की भावना, उसकी रक्षा, के लिये इसके कुशल सम्पादक प्रयत्नशील हैं।"

## 'सिद्धान्त रहस्य-एक अध्ययन' पर अभिप्रायः--

**तृतीय गृहाधीश श्री १०८ गो० श्री व्रजभूषणलालजी महाराज कांकरोलीः-**

"प्रस्तुत अध्ययन में सिद्धांत परिज्ञान, शास्त्रीय तलस्पर्शिता, एवँ भावना तथा मनोवैज्ञानिकता का अच्छा परिपाक हुआ है"

**श्री १०८ गो० श्री पुरुषोत्तम लालजी महाराज कोटाः--**

"झालानीजी ने इस अध्ययनात्मक निबन्ध में सिद्धांत रहस्य ग्रंथ के टीकाकारों के आशय को योग्यतापूर्वक सरल भाषा में समझाने का सराहनीय प्रयास किया है......झालानीजी को अपने प्रयास में सफलता मिली है।"

**द्वितीय गृहाधीश श्री १०८ गो० श्री गिरिधरलालजी महाराज (नाथद्वारा) इन्दौर:—**

"गोपालदासजी झालानी के प्रयत्न एवं परिश्रम से सर्वसाधारण जनता के लिये लाभ मिले इस दृष्टि को लक्ष्य में रखकर के 'सिद्धांत रहस्य एक अध्ययन' नामक पुस्तक प्रस्तुत की जारही है। इस के अध्ययन से सांप्रदायिक ज्ञान होकर समाज में जागृति आए यही अपेक्षित है"......(श्री हरिरायजी महाप्रभु के जीवन चरित्र प्रकाशन पर) "जीवन चरित्र के इस दूसरे अध्ययन में श्री हरिराय जी के जीवन चरित्र एवं ग्रंथ निर्माण सम्बन्धी विवरण संक्षेप में परन्तु समग्ररूप से बहुत सुन्दर रूप से किया गया है।......यह जीवन चरित्र प्रत्येक पुष्टिमार्गीय वैष्णव के लिये अत्यन्त मननीय है "श्री वल्लभविज्ञान" की यह सेवा सराहनीय है।"

## 'ब्रजयात्रा विशेषांक पर अभिप्राय'

**पूज्यपाद श्री १०८ गो० श्री ब्रजरत्नलालजी महाराज, सूरत:-**

"ब्रज यात्रा अंक प्राप्त हुआ। बहुत सुन्दर वर्णन लिखा गया है और बहुत सुन्दर अंक प्रकट हुआ है"

**संसद सदस्य पद्मभूषण सेठ गोविन्ददासजी नई दिल्ली:—**

'श्रीवल्लभविज्ञान' का ब्रजयात्रा विशेषांक प्राप्त हुआ। यह अंक ब्रजयात्रा का समस्त वृत्त बड़ी कुशलता से व्यक्त करता है। यात्रा का इतिहास, साथ ही उसकी वर्तमान स्थिति सभी बातों का इस अंक द्वारा परिचय प्राप्त हो जाता है, वह भी इतने संक्षेप से कि पाठक का मन जरा भी नहीं ऊबता। ऐसे अंक के लिये मैं हार्दिक बधाई देता हूं।

श्री वल्लभविज्ञान अब तीसरे वर्ष में प्रवेश कर रहा है। अपने दो वर्ष के अल्प जीवन में इस **पत्र ने** संकीर्णता से दूर रहते हुए वल्लभ सँप्रदाय की बड़ी अच्छी सेवा की है और आधुनिक काल के अनुरूप। इससे वल्लभ संप्रदाय के अनुयायियों को मूल्यवान् प्रेरणा

मिली है। नास्तिकता के इस युग में इस प्रकार की प्रेरणा बहुत ही आवश्यक है। भविष्य में भी 'श्री वल्लभ विज्ञान' इसी प्रकार कार्य सुचारु रूप से करता रहे, यही भगवान से प्रार्थना है।

## 'श्री सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक' विशेषांक पर अभिप्रायः-

**श्री १०८ गो० श्री ब्रजरायजी महाराज अहमदाबादः—**

'श्री वल्लभविज्ञान' का श्री सुबोधनी-पथ-प्रदर्शक अंक प्राप्त हुआ। अंक संग्राह्य एवं सदुपयोगी है। वल्लभविज्ञान की प्रगति होना, इस समय अत्यन्त आवश्यक है, जबकि समग्र पुष्टिमार्ग के सामने उसके अस्तित्व-अन-अस्तित्व के प्रश्न जारी रूप धारण किये हुए हैं। विचार आदान प्रदान, अथ च प्रचार तथा संगठन के लिये यह पत्र अपनी उपयोगिता प्रतिदिन बढ़ाकर वैष्णव जगत का अनिवार्य पत्र बने, यह शुभकामना एवं आशीर्वाद है।

**श्री १०८ गो० श्री माधवरायजी महाराज पोरबन्दरः—**

'श्री वल्लभविज्ञान' का ३-४ वर्ष का संयुक्तांक 'सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक, प्राप्त हुआ। प्रारंभिक भूमिका से लेकर ग्रंथ का उद्देश्य, कथावस्तु, एवं प्रागैतिहासिक तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए जो निर्माण कार्य किया जा रहा है वास्तव में हिन्दी जगत् के लिये वह महत्वपूर्ण, मौलिक एवं नूतन प्रयास होगा, जो तत्वविदों के लिये परम उपादेय सिद्ध होगा। गुजराती साहित्य संसार में तो कुछ प्रगतिशील विद्वानों ने श्री सुबोधिनी का यथाशक्ति प्रकाशन किया है किन्तु अद्यावधि हिन्दी जगत में इसका अभाव था, जिसकी पूर्ति प्रस्तुत प्रयास के द्वारा पूर्ण होती देख प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इस दिशा में आपका एवं वल्लभविज्ञान का सहयोग आदरणीय एवं प्रशंसनीय है। मैं हार्दिक वधाई देता हूं।'

**'कल्याण' पत्र के विद्वान् सम्पादक प० भा० श्री चिम्मनलाल गोस्वामि**

'श्रीवल्लभ-विज्ञान' का सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक विशेषांक देखा, बड़ी प्रसन्नता हुई। श्रीसुबोधिनी आचार्य महाप्रभु की भगवती वाणी

का कृपाप्रसाद है वैष्णवों के लिये, पुष्टिमार्गीय वैष्णवों का तो यह धन ही है । श्रीसुबोधिनी टीका में शुद्धाद्वैत दर्शन के प्रकाश में श्री आचार्यचरण महाप्रभुजी ने श्रीमद्‌भागवत शास्त्र का गूढ़ भाव प्रकट किया है और निस्संदेह इस तरह के गूढ़ भाव का प्राकट्य उन्हीं क समान समर्थ आचार्य के अद्‌भुत दिव्य प्रयास का प्रतीक है ।

श्रीभागवत के द्वादश स्कन्ध निकुञ्जरमणेश्वर श्रीनाथजी के लीला-गत द्वादश अंग हैं, और श्रीसुबोधिनी उन अंगों की दिव्य ज्योति है । ज्योति कों समझाने के लिये आप का सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक विशेषांक एक सफल प्रयोग है । मेरा हार्दिक धन्यवाद स्वीकार कीजिये ।

**पुनश्च**—श्रीवल्लभविज्ञान के द्वारा श्रीआचार्य महाप्रभु के सिद्धांतों का बड़े ही सुन्दर ढंग से प्रचार किया जा रहा है । उसमें प्रतिमास दी जाने वाली सामग्री से उक्त सिद्धांतों को समझने में भी पर्याप्त सहायता मिल रही है तथा पुष्टिमार्गीय वैष्णवों में संगठन की दिशा में भी इसके द्वारा समुचित प्रयास हो रहा है—यह जानकर बड़ा संतोष होता है ।

**डा० विश्वनाथ शुक्ल, अध्यक्ष हिन्दी एवं संस्कृत विभाग अलीगढ़-विश्वविद्यालयः—**

'वास्तव में 'श्री वल्लभ विज्ञान' का प्रत्येक नवीन अंक गतांक से कुछ न कुछ वैशिष्ट्य लेकर आता है यह अत्यन्त आनन्द की बात है । अब तक 'विज्ञान' के द्वारा श्री वल्लभ दर्शन एव भक्ति मार्ग की जो सेवा हुई है वह अपूर्व है । श्री सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक ने तो वस्तुतः अकथनीय उपकार किया है ।

**श्री गोविंदलाल एच० भट्ट एम० ए०:—**

'श्री सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक का भाग तथा श्रीमदाचार्यचरणों के सिद्धान्तों का स्वल्प परिचय का भाग मैंने पढ़ा । बहुत आनन्द हुआ ।...... '

**शास्त्री श्री गोवर्धनेश विट्ठलजी जोशी साहित्यधर्माचार्य, काव्य पुराण-तीर्थ, आदि रांदेरः-**

'श्री वल्लभविज्ञान का श्री सुबोधिनी-पथ-प्रदर्शक विशेषांक मिला पढ़कर अत्यधिक आनन्द हुआ । आपने प्राचीन साहित्य की गवेषणा एवं प्रकाशन के कार्य में जो अवधान किया है वह श्लाघनीय है । आप वैष्णवों के लिये एक अनुपम महाकार्य कर रहे हैं तदर्थ आपको पुनः पुनः अभिनन्दन देता हूं ।'

...TUTE OF ADVANCED...
16034
29/11/66

(कवर पृष्ठ २ से चालू)

# अहंता ममता

**भगवदर्थं कृते जगति, स्वस्याहंताममतायां भगवद्विरोधेन बन्धः स्यात् (१-८-४०)**

भगवान के लिये रचे हुए जगत् में यदि जीव अहंता ममता रखे तो, भगवान का विरोध होने के कारण, उसे बन्धन ही प्राप्त होगा ।

**यथा भगवद्भजने भगवदीयाः षड्गुणाः स्वस्मिन् संक्रमन्ते तथा देहादि-भजने षड् दोषाः संक्रमंतेः । उत्पत्तिर्नाशो दुःखं कर्माणि परितापो हीनता च (२-२-७)**

जिस प्रकार भगवान् का भजन करने से भगवान् के छह गुण (ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री, ज्ञान, वैराग्य) अपने में आते हैं, उसी प्रकार देहादि का भजन करने से छह दोष (उत्पत्ति, नाश, दुःख, कर्म, परिताप, हीनता) अपने में आते हैं ।

**आत्मानमेव बहुमन्यमाना उन्मत्ता भवन्ति, ते सर्वदैव न माननीयाः (१०-६५-६६)**

अपने को ही बड़ा मानने वाले उन्मत्त होते हैं वे कभी भी मान देने योग्य नहीं ।

**स्तोत्रेण स्मये जाते तेजोऽपगच्छति (१०-६६-४७)**

किसी के द्वारा स्तुति (प्रशंसा) किये जाने से अहंकार होता है और उससे तेज की हानि (विनाश) होता है ।

*×*